उम्मीद की किरण

धीरेंद्र उपाध्याय

वृद्ध का मौत को चकमा

- कैंसर ने था जकड़ा
- दिल ने भी दे दिया था धोखा

मुंबई निवासी ६४ वर्षीय वृद्ध रमन ढींगरा (बदला हुआ नाम) ने यह मान लिया था कि अब उनकी मौत पक्की है, क्योंकि उन्हें जानलेवा बीमारी कैंसर ने जकड़ लिया था। साथ ही दिल ने भी धोखा दे दिया था। हालांकि, उन्होंने जीने की जिद नहीं छोड़ी। उनकी इस जिद ने ही मौत को मात दे दिया। रमन ढींगरा (बदला हुआ नाम) ने कहा कि उनको सीने में दर्द के कारण आगे के इलाज के लिए लीलावती अस्पताल में भर्ती कराया गया था। इस बीच मुझे पता चला कि मुझे कोलन कैंसर है। यह सुनते ही मेरे पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। मैं बहुत डर गया था, लेकिन मैंने हार नहीं मानी और मौत से लड़ने का फैसला किया। इस बीच अस्पताल के डॉक्टरों द्वारा तुरंत इलाज शुरू कर दिया। अस्पताल के वरिष्ठ गैस्ट्रो कैंसर सर्जन डॉ. दीपक छाबड़ा ने कहा कि जब रोगी आया तो उसे पिछले तीन महीने से कमजोरी और वजन घटने की शिकायत थी। उसका हीमोग्लोबिन केवल पांच ग्राम था। ईसीजी में कुछ इस्केमिक परिवर्तन दिखे और एंजियोग्राफी से पता चला कि उसकी मुख्य कोरोनरी धमनियों में ८० फीसदी से अधिक ब्लॉकेज हैं। इसके साथ ही एनीमिया के मूल्यांकन से पता चला कि रोगी की बड़ी आंत के दाहिनी ओर कैंसर की वृद्धि हुई है। इस मरीज को कार्डियक ब्लॉकेज और कोलन कैंसर का पता चला था। ऐसे में मरीज के इलाज के लिए कार्डियोलॉजिस्ट, कार्डियक सर्जन और गैस्ट्रो कैंसर सर्जन की एक टीम एक साथ आई है। मरीज को प्रत्येक मल त्याग के दौरान हल्का रक्तस्राव हो रहा था। साथ ही समय पर इलाज न होने के कारण एनीमिया भी हुआ था। इससे हृदय पर अधिक दबाव पड़ता है। ऐसे में सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि हार्ट सर्जरी या कैंसर सर्जरी को प्राथमिकता दी जाए। किसी भी सर्जरी में शामिल तनाव कारकों के चलते पहली सर्जरी तीव्र दिल के दौरे का कारण बन सकती था। यदि हृदय की सर्जरी पहले की जाती तो मरीज को रक्त पतला करनेवाला इंजेक्शन दिया जाता। इससे रक्तस्राव बढ़ सकता था, क्योंकि कोलन कैंसर के कारण अत्यधिक रक्तस्राव का खतरा रहता है। वरिष्ठ कार्डियक सर्जन डॉ. पवन कुमार ने कहा कि मरीज को कोलन कैंसर के साथ-साथ बाईं मुख्य धमनी में कोरोनरी धमनी की रुकावट थी। मरीज का वजन ५० किलोग्राम था और वह शारीरिक रूप से बहुत कमजोर था इसलिए कोलन कैंसर सर्जरी के लिए एनेस्थीसिया प्रदान करना भी उतना ही चुनौतीपूर्ण था। ऐसे में इस मरीज को तत्काल कोरोनरी धमनी बाईपास सर्जरी की आवश्यकता थी। उसके कमजोर शरीर और खराब हेमोडायनामिक स्थिति को देखते हुए सभी सावधानियों के साथ बाईपास सर्जरी की गई। इसमें मरीज पूरी तरह ठीक हो गया। कैंसर को फैलने से रोकने के लिए तीन सप्ताह के भीतर एक मरीज को सफल कोलन कैंसर सर्जरी के लिए तैयार करना सुरक्षित कार्डियक सर्जरी का एक अनूठा उदाहरण है।